सुख शांति समृद्धि

वर्ष : १ अंक -१ हिन्दी मासिक मुंबई, दिसंबर २०१२ संपादक : जितू सोमपुरा पृष्ठ - ८ मूल्य : २ रुपये

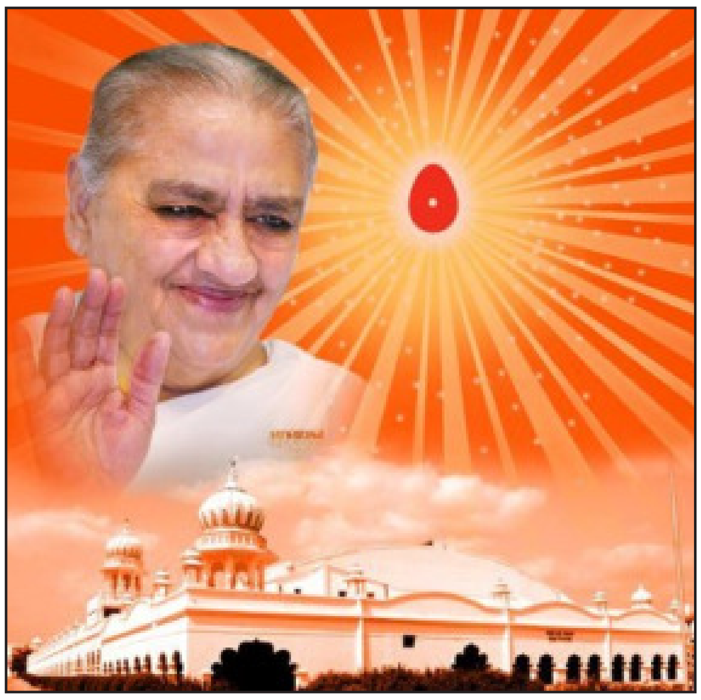

ईश्वरीय संदेश विश्व के कोने-कोने में पहुंचाने में यह मासिक विशेष कार्य करेगी ऐसा विश्वास है-राजयोगी बी. के. करूणाजी

परम तीर्थधाम आबु पर्वत सर्व तीर्थों में महान तीर्थ है। ऐसे महान पर्वत पर स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अद्भुत पवित्र तीर्थधाम जहां पर ईश्वरीय प्रकाश, शक्ति और आशीर्वाद की अलौकिक अनुभूति सदा होती रहती है, वहां से सर्व आत्माओं के परम पिता परमातमा से प्रार्थना कि आपके पाठक परिवार सहित समग्र मानव समाज 'सुख शांति समृद्धि' प्राप्त करे और ये ईश्वरीय संदेश कोने-कोने में पहुंचाने में आपकी यह पत्रिका विशेष कार्य करेगी। ऐसा मुझे विस्वास है और मेरी शुभकामनाएं हैं...।

हमारी मनोवृत्ति शुद्ध और शांत हो यही है आधुनिक जमाने का पुरुषार्थ-जानकी दादीजी

वर्तमान समय के प्रमाण हमारा आधुनिक पुरुषार्थ या तीव्र पुरुषार्थ क्या होना चाहिए?

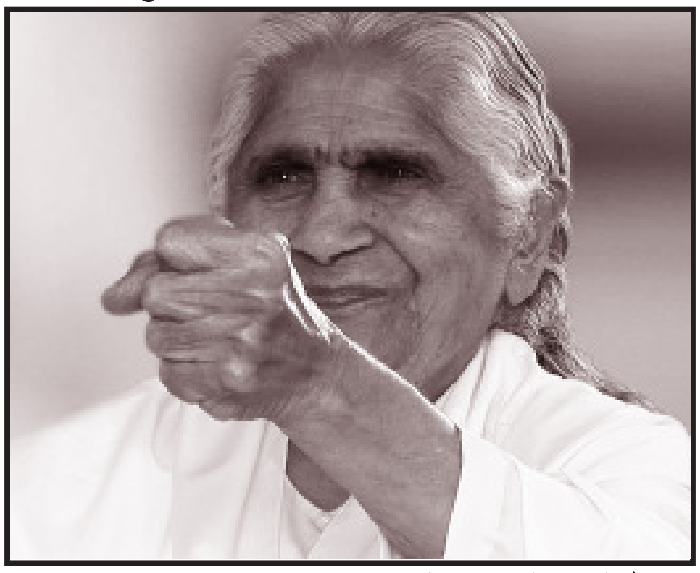

जानकी दादी : जो जरूरी नहीं है, वह संकल्प भी न आये, संकल्प की क्वालिटी अच्छे से अच्छी हो। बाबा ने कहा, संकल्प और समय संगम के बहुत बड़े खजाने हैं। एक सेकंड में भी बहुत कमाई है। हमारा एक सेकंड भी व्यर्थ संकल्प चला तो इसमें बहुत-बहुत नुकसान है। जब व्यर्थ संकल्प चलते हैं, उस घड़ी महसूस नहीं होता है। अगर कोई महसूस करायेगा तो भी कहेगा कि यह मेरी बात नहीं समझता है। तो ऐसा अटेन्शन रखना वर्तमान समय का मॉडर्न पुरुषार्थ होना चाहिए।

वृत्तियां बनती हैं मन में, इसलिए कहते हैं मनोवृत्ति ऐसी है। हमारी मनोवृत्ति शुद्ध, शांत हो, यह है मॉडर्न जमाने का पुरुषार्थ।

(पृष्ठ ६ वर...)

ईश्वर को प्रार्थना

प्रति,
परम प्रिय पाठक परिवार,

प्रणाम! आज मैं अपनी भावनाओं के गीत को प्रस्तुत करना नहीं चाहता। एक दिन मेरे कार्य का संगीत ही सबकुछ कहेगा। मैं ऐसा दिया बनना चाहता हूं, जिससे लोग मशाल जलाकर अपनी मंजिल की ओर आगे बढें। आइये हम सब मिलकर इस मासिक को मानव समाज की प्रेरणा और सेवा का जंगम तीर्थ बनाये। सफलता संस्कार और स्वास्थ्य के सुवर्ण सुत्र का प्रसाद लोगों में बांटे और इश्वर से प्रार्थना करें कि पाठक परिवार सहित समाज में हर एक को जीवन में 'सुख शांति समृद्धि' प्राप्त हो, आभार!

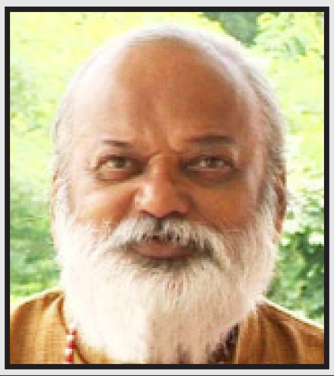

-जितू सोमपुरा (संपादक)

प्रथम प्रश्नोत्तरी अंक जानकी दादी जी को समर्पित

हमारा गौरव है कि 'सुख शांति समृद्धि' का प्रथम मासिक अंक विश्व व्यापी आध्यात्मिक संस्था प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी के ज्ञान पुष्पों पर आधारित हैं..। उनसे पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पर आधारित है।

दादीजी एक विवेकशील महिला है। एक ऐसी नारी जिसने आध्यात्मिक सच्चाइयों को समझा है और व्यक्तिगत शांति तथा शक्ति की उच्चतम स्थिति को प्राप्त कर लिया है। विप्लव, हलचल के कगार पर खड़े आज के डांवाडोल संसार में दादी जानकी जी ने स्वयं का संतुलित और व्यवस्थित संसार खोज निकाला है।

९६ वर्षीया दादी जानकी जी को विश्व-भर में एक महान शिक्षक व सलाहकार के रूप में मान्यता प्राप्त है। दादी जानकी जी ने लगभग ७५ वर्षों से अपना जीवन मानव-सेवा के लिए समर्पित किया हुआ है। उनका आध्यात्मिक प्रशिक्षण काल २१ वर्ष की आयु में सन् १९३७ में प्रारंभ हुआ और वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक सदस्यों में से एक है। इन संस्थापक सदस्यों ने पहले १४ वर्ष तक एकांत में साधना की। इसी प्रगाढ़ चिन्तन और आध्यात्मिक ज्ञान के अध्ययन ने दादी जी को भविष्य के लिए सुदृढ़ आधार प्रदान किया।

अपने अनेक वर्षों की मानवीय सेवा के दौरान दादीजी का हमेशा यह प्रयत्न रहा कि मनुष्यों के सर्वांगीण विकास का प्रयत्न किया जाना चाहिए जिससे कि उनका भावनात्मक, आध्यात्मिक, रचनात्मक एवं सामाजिक विकास हो सके।

आप अभिमान, मोह, लोभ छोड़ना चाहते हैं?

प्रश्न : अभिमान, मोह, लोभ छोड़ने के लिए क्या चिंतन करें?

दादी जानकी जी : आत्मा ६३ जन्मों से अभिमानी बन गई है। परमात्मा पिता कहता है, देख तेरे में अभिमान आ गया है। संबंधों का भी अभिमान आता है। उसमें फिर लोभ-मोह भी आ गया है। लोभ मोह के कारण गुस्सा भी आता है। थोड़ा भी किसी में गुस्सा है तो समझ जाये, अभिमान के कारण गुस्सा है। अभिमान के कारण संतुष्ट नहीं है। ब्रह्मा बाबा को सामने रखो तो अभिमान छूट जाता है। बच्चा हूँ ना, मेरा बाबा है ना! वो बचपन का सुख अंतिम घड़ी तक रहे, जैसे ब्रह्मा बाबा ने अंतिम घड़ी तक स्मृति में रहने का पार्ट बजाया। निराकारी स्थिति में रहकर निर्विकारी बन, निरहंकारी रूप दिखाया। इतना भी कभी अंश मात्र अहंकार या आवेश में नहीं देखा। अभी अव्यक्त होकर भी सभी को बहुत प्यार करता है, समझानी देता है, पर अंदर कितना शीतल है। बाबा कहता था, बच्चे योगी अर्थात शीतल काया वाले, अंग-अंग शीतल। चलन से भी शीतलता का अनुभव हो, औरों की तपत बुझाने वाले।

किसी भी कारण से गुस्सा न आवे, आवेश की भी उत्पत्ति हुई तो फेल। योगी शीतल तभी है जब स्वीट साइलेन्स में रहता है।

असली घर हमारा शांतिधाम है। यहां हम सदा मेहमान हैं। अपने को सदा मेहमान समझना महान आत्मा का काम है। ईश्वर कितना प्यार देता है जो अपनी भी बातें भूल जाये, सारी दुनिया की बातें भूल जाये। इतनी उसकी याद हो जो हमारे सामने जो

यहां हम मेहमान हैं, असली घर शांतिधाम है

भी आये, उसको भी शिव बाबा की याद दिलाये और कोई तो काम है नहीं। संगमयुगी है, संपन्न और संपूर्ण मेरे को बनना है। ये बने, वो बने इसकी चिन्ता भगवान करे, मैं क्यों करूं।

मोह की रगें टूट जानी चाहिए। देह में भी मोह न हो, संबंधियों में भी न हो। धन भी मैं क्या करेंगी। खिलाने वाला शिव बाबा बैठा है।

भले कोई मेरी बात को स्वीकार न करता हो, किसके सामने अच्छा खाना रखो, पर उल्टी का ख्याल आ रहा है, सिर में दर्द है तो खाना छोड़ देगा ना, इसमें उसका क्या दोष है। हम क्यों कहें कि यह अस्वीकार करता है। अभिमान की अति सूक्ष्म बातें ऐसी हैं जो मीठा बनने का लक्ष्य ही नहीं है। जैसे बाबा की मुस्कराहट में ही सब खुश हो जाते हैं, ऐसी याद और मुस्कराहट हो। जब मेरे को खुशी का अनुभव है तो मेरे को देख और खश हो जावें। जिसको जितना अनुभव है उसी अनुसार चल रहा है। तो क्यों नहीं अनुभव को बढ़ायें। थोड़ा भी अभिमान दुश्मन है। भगवान जो वरदान देता है वो काम नहीं करेगा। थोड़ा मन लेकर खुश हो गया तो भगवान फ्री हो गया, कहेगा, यह तो इसमें ही खुश हो गया। अरे अभिमान सबसे बड़ा दुश्मन है। इसलिए बाबा कहता है, आत्मा समझ कर मुझे याद करो। देह द्वारा निमित्त सेवा कराके ऊंचे से ऊंचा भाग्य बनाने का भाग्य देता है। आत्मा भाग्यवान बन रही है। ऐसी बातें जो दिल को लगती हैं, वो दिल में हों। बाकी दिल सदा साफ, सच्ची दिल से साहेब को राजी रखो। तो कभी नाराज नहीं होंगे, न किसी को नाराज करेंगे। बोलचाल में अभिमान असुल न हो, यह ध्यान शिव बाबा बाबा का सच्चा बच्चा बहुत रखता है, जो चाहिए वो आपे ही मिलता है। मांगना नहीं पड़ता है। सह सहज हो रहा है, शिव बाबा आपे ही प्रेरणा देता है, आपे ही सेवा का ऑफर करता है। बाबा ने केवल शांत रहना सिखाया है।

पहले अंदर की सफाई फिर शिव बाबा के साथ सच्चाई भरा स्नेहयुक्त संबंध

दादी जानकी जी : एकांतवासी और अंतर्मुखी बनकर, अनुभूति द्वारा अपने को परिवर्तन करने का पुरुषार्थ किया ही नहीं है जो अपने को देखें। मुझ आत्मा में अनेक जन्मों का विकारी कर्मबंधनों का दुख भरा पड़ा है, वो ज्ञान, समझ, योग तथा भघवान के प्यार से खत्म नहीं किया है। अपने पर मेहनत नहीं की है, इसलिए अंदर सफलता नहीं, खुशी नहीं इस कारण चिड़चिड़ापन छूटता नहीं। वाणी में रूहानियत और मधुरता हो तो रूह में खुशी है ना। अगर रूह की सफाई नहीं हुई है, तो असली शान्ति और प्रेम इमर्ज नहीं होता है। कई पूछते हैं, समय, भाग्य और भगवान-तीनों में से किसने मुझे शान्ति का अनुभव कराया। एक नहीं, तीनों बातों की जिसे अच्छी तरह कद्र हो वो अपने को अंदर से शुद्ध, शांत बना लेता है। बीती बातें क्यों घटी थी? देहभान आया था, माया का वार हुआ था पर अब वो पार्ट पूरा हुआ है, मैं मरजीवा हो गई, अब आत्मा का परमात्मा से मिलन हुआ है तो खुशी, शक्ति आ गई। खुशी और शक्ति जिसके पास है, उसके पास चिड़चिड़ापन और थकावट नहीं आ सकती। थकावट प्रेम स्वरूप, शान्त स्वरूप बनने नहीं देती। थकावट अब के कामों से नहीं हुई है, यह बहुत पुरानी है। अंदर से महसूसता हो, मुझे इसे मिटाना है। मिटाने में समय क्यों लगता है? दूसरों का जो व्यवहार है ना, उस पर टीका करते हैं जैसे कि मैं बड़ी हूँ, इनके मेरे साथ ऐसे नहीं चलना चाहिए। इसी प्रकार के ख्यालों में हूँ ना तो समय तो इन बातों में दे दिया, अपने आपको देखा ही नहीं। ये छोटे या बड़े क्या कर रहे हैं - यदि मैं इन्हीं ख्यालों में हूँ तो गुस्सा ही काम करेगा।

प्रश्न : चिड़चिड़ेपन का, गुस्से का कारण कई बार अंदर भरी हुई कोई पुरानी बात या पुराना दुख होता है, उसे निकालने की विधि क्या है?

गुस्से के कारण बड़ों का नुक्स निकालेंगे। समान वाले को आगे बढ़ता देख सहन नहीं करेंगे, छोटों को कहेंगे, ऐसे नहं, वैसे करना चाहिए। फिर क्या हाल होगा? यज्ञ में चाहे छोटे हैं, चाहे निमित्त बड़े हैं, सबके लिए सावधानी है। बड़े हो या बीच वाले हो, किसी की गलतियों को सुनना, देखना, वर्णन करना या गलतफहमी में खुद भी रहना-यह नहीं हो।

पूरा समझने से पहले ही सोच लेना कि इसने जो बोला, वह राग ही बोला है - यह ठीक नहीं। अरे, आप पूछो तो सही ना। अंदर की धरनी की सफाई नहीं है, किचड़ा धरती में पड़ा ही हुआ है, वो साफ किया ही नहीं है, तो बीज क्या बोयेंगे, फल क्या निकलेगा। बाबा ने कहा है, संकल्प है बीज। सीजन है अच्छा बीज डालने का। पुराना खत्म कर धरती को साफ कर अच्छा बीज डालना है। इतना तो मैं सोचूँ ना। भले ८ घंटे भी बाबा के कमरे में बैठकर योग करो। कहेंगे, योग अच्छा लगा। अच्छा है परंतु अंदर सफाई करना जरूरी है। पहले सफाई, फिर बाबा के साथ सच्चाई भरा स्नेह युक्त संबंध। व्यवहार और संकल्प में शुद्धि है तो सत्यता काम करेगी। योग माना ही हर समय अपनी चेकिंग। बाबा के पास आकर बैठो, हमारे व्यवहार में किसी के भाव स्वभाव का प्रभाव न हो। बाबा समान तो दूर की बात, पहले तो मेरे में कोई कमजोरी ना रहे, अपने पर अटेन्शन रखकर इतना अच्छा मैं परिवर्तन लाऊं। दूसरे क्या सोचते, बोलते-उन बातों पर मैं ध्यान न दूँ। थोड़ा गंभीरतापूर्वक, सच्चाई वाला पुरुषार्थ चाहिए।

धर्म क्या है?, आज के समय में धर्म का संदेश क्या है?

दादी जानकी जी : ''मैं एक हिंदू हूं, आप एक ईसाई हैं।'' अब मैं ऐसा कभी नहीं कह सकती। मेरा दृष्टिकोण बदल गया है।

अब मैं कहूँगी - ''चाहे आप ईसा की मूर्ति के सामने खड़े हो या कृष्ण की प्रतिमा की पूजा कर रहे हो, फिर भी हमारा एक ही पिता ईश्वर है।'' हम सब उस एक पिता के बच्चे हैं।''

.ज ा ह ा वास्तविक ज्ञान है और वचनों में सत्यता है, वहाँ शक्ति भी है।

एक दूसरे से लड़ाई करने के लिए भगवान से शक्ति प्राप्त नहीं होती, वह तो हमें प्राप्त होती है, शांतिमय बनने के लिए।

सच्चा धर्म कहता है- ''शांति'', सच्चा धर्म शांति की शिक्षा देता है।

यदि मैं एक सच्ची दार्मिक आत्मा हूं, तो मैं आध्यात्मिक बातों में भी निपुण बनूंगी। मैं अपने आध्यात्म-स्वरूप पर एकाग्र होने में सफल रहूँगी।

मैं अपने अतती के प्रभावों से भी मुक्त हो जाऊँगी। मेरे अन्तःकरण में केवल शांति व खुशी भरी होगी।

''धर्म'' तो मेरे जीवन में धारण करने के लिए है।

धार्मिक व्यक्ति की झलक आचार, विचार और में स्पष्ट दिखाई देती है।

जीवन में आज मानव के पास एक पक्षीय गति है-या तो वो भौतिकवादी जीवन जीता है या वो धर्म पथ लेकर सन्यास ले लेता है, जिससे अनेक प्रश्न-चिन्ह उठ खड़े होते हैं, कि कहीं उत्तर दायित्व से पलायन तो नहीं है।

धर्म अपनी जिम्मेदारियों का संतुलन बनाए रखने की कला है। ये जिम्मेदारियां है, स्वयं के प्रति, परिवार क प्रति व सारे विश्व के प्रति। इस संतुलन बनाए रखने की कला का आधार है, स्वयं की, परमात्मा की व कर्मो के नियम की गहरी समझ।

वर्तमान समय हमें ''योगः कर्मेशु कौशलम्'' की पद्धति अपनानी होगी।

हम इतने सुविधा-भोगी न हो जायें कि जीवन-वीणा के तार बहुत ढीले हो जायें, उनसे स्वर ही न निकलें। इतना धर्म के नाम पर कस ना दें कि टूटने का भय हो जाये। सही स्वर तभी निकलेंगे जब धर्म और कर्म में संतुलन होगा, परमार्थ और व्यवहार में संतुलन होगा।

कलयुग में धर्म के अस्तित्व को टिकाये रखने के लिए चाहिए, ''संतुलन जीवन''।

हम इतने सुविधा भोगी न हो जाय कि जीवन वीणा के तार बहुत ढीले हो जाये, उनसे स्वर ही न निकले। इतना धर्म के नाम पर कस ना दे की टूटने का भय हो जाये। सही स्वर तभी निकलेंगे, जब धर्म और कर्म में संतुलन होगा। परमार्थ और व्यवहार में संतुलन होगा।

धर्म अनुयायी वही है, जिसके मन, वचन, कर्म में सकारात्मकता हो और गुणों की खुशबू हो।

जो अगर धार्मिक अनुयायी होते भी अगर उसके मन, वचन, कर्म तथा व्यवहार में-क्रोध, लोभ, अहंकार, और मोह का अंश भी विद्यमान है, तो वो धार्मिक नहीं कहलाएगा।

यह कहना कि ''जैसा चल रहा है, ठीक है'' इस बात का द्योतक है, कि मैंने न तो अपनी अज्ञानता को पहचाना है तथा न ही बुराईयों से अपनी सुरक्षा की आवश्यकता समझी है।

आध्यात्मिकता वो है, जो मेरे जीवन में अच्छाई और बुद्धिमत्ता के रूप में प्रकट हो रही है-मेरी तलवार है, मेरी सुरक्षा है।

सभ्यता के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। परंतु वास्तव में वर्तमान समय आध्यात्मिक शिक्षा की बहुत आवश्यकता है।

एक तरफ आज व्यक्ति बिना किसी चरित्र एवं नैतिकता के पल रहे हैं और यही कारण है कि आज की समस्याओं का प्रभाव केवल सामाजिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि भौतिक स्तर पर भी है। आजकल के कार्य एवं व्यवहार तथा दिनचर्या अनैतिक होने के कारण उनके स्वास्थ्य पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव है।

दूसरी तरफ आज इन्सान जान चुका है, आध्यात्मिक शिक्षा हमें सिखाती है, कि मन को तनाव व उतार चढ़ावों से मुक्त कैसे रखा जाय। जब आप स्वयं को परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होने देते हो तो उसका परिणाम होता है, मन की चंचलता। आध्यात्मिक ज्ञान से आप एकाग्रता प्राप्त करते हैं, तथा सुरक्षित रहते हैं।

धर्म संप्रदाय का कर्तव्य है विश्व का परिवर्तन करना। अभी विश्व अनैतिकता और अधर्म की स्थिति में है। जिसके परिणाम स्वरूप मानवता त्राहि-त्राहि कर रही है। अतः इस मानव की जीवन पद्धति में आमूल परिवर्तन समय की मांग है, वो समय आ गया है।

एक संकल्पना, जो कि हम सभी के सामने है, वह यह कि आज हम विश्व-परिवर्तन के मोड़ पर खड़े हैं। ऐसा लगता है जैसे सारा विश्व अंधकारमय है। परंतु रात के बाद दिन अवश्य ही आना है और हम सभी उस स्वर्णिम प्रभात के संधिकाल पर है। हम सभी आध्यात्मिक सूर्य की किरणों को देख सकते हैं। यही शुभ संदेश हम सभी को देना चाहते हैं।

हमारा ''सुखमय संसार'' के प्रति चिन्तन अवश्य ही प्रत्येक इकाई को प्रेरित करेगा और सुखमय संसार बनेगा।

हमारे संकल्प में हम दृढ़ कैसे रहें?

प्रश्न : कई बार हम अच्छे संकल्प करते हैं, लेकिन उस पर कायम नहीं रह पाते हैं, क्योंकि दृढ़ता की कमी होती है इसके लिए योग क्या मदद कर सकता है?

दादी जानकी जी : योग मदद कर सकता है, दृढ़ संकल्प को, दृढ़ संकल्प से योग में मदद मिलती है। पहले समझो विचार करो योग क्या है? ज्ञान, योग और याद की गहराई में जाओ, इसके लिए श्रेष्ठ चिंतन स्वचिंतन में रहना है, यह दृढसंकल्प हो। सारा दिन पर चिंतन और पराये या पुराने चिंतन करते रहेंगे तो संकल्प में दृढ़ रह नहीं सकते हैं। तो अब राइट चिंतन क्या है, यह समझने के बाद एक भगवान ही चिंतन में आ जाये। दृढ़ संकल्प तब ही होगा जब बाबा की मदद का अनुभव होगा। हम और चिंतनों से फ्री हो गये हैं, दिल से थैंक्स बाबा करके संकल्प दृढ़ किया तो समझो यह बाबा ने मदद की। बाबा कहा तुरंत अनभव करो, यह भावना हो। पहले तो विश्वास नहीं है, तो भावना नहीं है। भावना से भाड़ा मिल गया, विश्वास बैठ गया। भावना से विश्वास बैठा है तो उसी आधार से चल रहे हैं, परंतु दृढ़ संकल्प से एक सेकेण्ड में बड़ी बात भी छोटी हो जाती है। हिम्मत, भावना, विश्वास, निर्विकल्प, संकल्प की क्वालिटी को दृढ़ बना दिया तो दृढ़ संकल्प ने इतना लायक बना दिया। तो पहले तो भावना चाहिए, बावना से प्राप्ति होती है, उसमें विश्वास बैठ जाता है तो फिर अनुभव से जो कहते हैं कि मेरा यह संकल्प है उसमें दृढ़ता रहती है। पाँच अंगुली भी बराबर नहीं है तो यह कैसे एक होंगे, इस चिंतन में टाइम वेस्ट नहीं करो। एक बाबा के प्रति दृढ़ संकल्प हो और थोड़ा धीरज, शांति, प्रेम से काम लो तो बस देखो इससे कईयों की कमजोरियों को खत्म कर सकते हैं। माया को भी जैलसी होती है कि यह पक्की भगवान की हो रही है। इसलिए फिर कोई-न-कोई बात सुनते या सुनाते तो उसमें हाँ, हाँ करते हैं, तो उसी घड़ी अपने संकल्प की क्वालिटी घटिया हो गयी। एक बाबा के साथ ही बैठूं, तुम्हीं से खाऊं.. यह जो अनुभव है और कोई भात मैं जाने नहीं देता है, न कोई बात आने देता है, फ्री हो जाते हैं परंतु इतनी लगन चाहिए पुरुषार्थ करने की। ऐसा कम्पनी चाहिए। फालतू संग में, फालतू बातों में समय गँवाने की आदत को छोड़ना पड़ेगा। जिस बात से हमारा कोई कनेक्शन नहीं है वो छोड़नी पड़ेगी क्योंकि कोई जरूरत नहीं है। अगर अनावश्यक अयथार्थ बातों में समय गया तो वो शुद्ध संकल्प और दृढ़ संकल्प से बहुत दूर होगा। कोई बात के अधीन न हो जायें। एक बाप दूसरा न कोई, एक तू है मेरा बाप, मैं हूँ तेरा बच्चा... कुछ भी हा जाये... यह है याद।

परमपूज्य संत महात्माओं के आशीर्वाद के साथ सुख शांति समृद्धि परिवार द्वारा 'सुख शांति समृद्धि' मासिक का शुभारंभ

- 'सुख शांति समृद्धि' मासिक की हिंदी समन्वय आवृत्ति में भारत के तमाम धर्म संप्रदाय और विभिन्न विचारधारा के संत महात्माओं द्वारा जीवन जीने की कला का सुंदर समन्वय।
- ईश्वर धर्म और जीवन के प्रति नई पीढ़ी को मार्गदर्शन करने के लिए ज्ञान पर आधारित प्रेरणादायी प्रश्नोत्तरी
- भारत के परम पूज्य संत महात्मा द्वारा जीवन जीने की कला के सुंदर समन्वय से संस्कार एवं शांति की सुंदर अनुभूति
- विविध क्षेत्र की प्रसिद्ध हसित्यों के द्वारा अपने संघर्ष और सफलता के रहस्य एवं प्रेरणा की अनोखी प्रस्तुति.
- नौकरी और व्यवसाय में शक्ति और समृद्धि प्राप्त करने के लिए मैनेजमेंट गुरु एवं श्रीमंतों द्वारा श्रेष्ठ मार्गदर्शन.
- भारत के श्रेष्ठ तबीब और मनोचिकित्सकों द्वारा सुंदर स्वस्थ्य हेतु अनमोल सुझाव.
- विविध अवगुणों और मानसिक तनाव से मुक्ति, आत्मविश्वास की प्राप्ति तथा कार्यक्षमता एवं व्यक्तित्व में विकास के विभिन्न पहलुओं की सुंदर स्पष्टता.
- आओ हम सब मिलकर इस मासिक को मानव समाज की प्रेरणा और सेवा का अलौकिक संगम तीर्थ बनाएं।
- हमारी वेबसाईट पर सुख शांति समृद्धि की विशेष आवृत्ति नियमित रूप से प्रसिद्ध होती रहेगी।
- **आशा करते हैं कि आप सबके आशिर्वाद और सहयोग से बहुत जल्द 'सुख शांति समृद्धि' की साप्ताहिक आवृत्ति प्रसिद्ध होगी। आप इस मासिक के पत्रकार, मार्गदर्शक या सहयोगी बनना चाहते हैं तो हमारा संपर्क करें मो. : 9324446487**

सुख शांति समृद्धि पाठक परिवार के लिए खुशखबरी

ओम शांति ओम विभाग के सलाहकार संपादक होंगे राजयोगी बी. के. करुणाजी

राजयोगी बी. के. करुणाजी ने मेकेनिकल इंजीनियरिंग, पत्रकारिता एवं (बिजनेस मैन की सफल कारकिर्दी का त्याग करके युवावस्था में में ही मानव समुदाय के आध्यातिमक विकास के लिए अपना जीवन समर्पित किया। समग्र दक्षिण भारत में कर्नाटक, तमिलनाडु केरल एवं आंध्र प्रदेश में ब्रह्माकुमारी की आध्यात्मिक सेवाओं के विस्तृतीकरण में मुख्य संस्थापक की अग्रसर भूमिका निभाई।

ब्रह्मकुमारी के मल्टी मीडिया विभाग के सफल नेतृत्व द्वारा इन्होंने ओडियो, वीडियो, मैगजीन और टी. वी. चैनल के क्षेत्र में ब्रह्मकुमारी संस्था के अद्वितीय सेवा कार्य को अपनी कुशलता और भारी परिश्रम से हजारों कार्यक्रम का निर्माण करके सर्जनात्मकता एवं प्रयास के अत्यंत उच्चतम स्तर पर पहुंचाया।

प्रसिद्ध विश्वसनीय समाचार संस्था यु. एन. आई. के भूतपूर्व वरिष्ठ विशेष संवाददाता का अनुभव तथा टी. वी. मीडिया जगत के आधुनिक टेक्नीकल ज्ञान के विशेषज्ञों के करुणाजी के नेतृत्व में ब्रह्माकुमारी की पीस ऑफ माइंड चैनल तथा रेडियो मधुबन एफ. एम. ९०.४ क्रमशः अपूर्व सफलता की ओर आगे बढ़ के जन समुदाय में लोकप्रिय हो रही है। ऐसे आदरणीय महारथी सुख शांति समृद्धि पत्रिका में बतौर कंसल्टंट अपना कीमती वक्त दे रहे हैं, इसके लिए हम उनके आभारी हैं। पाठक परिवार को मासिक के हर अंक में ओम शांति ओम विभाग द्वारा उनके साक्षात्कार संपादन का अमूल्य लाभ मिलेगा, ये सबके लिए अत्यंत हर्ष की बात है।

प्रश्न : आनंद और खुशी एक ही है या इसमें कोई अन्तर है?

दादी जानकी जी : पहले खुशी होती है ज्ञान से। बाबा मिला, परिवार मिला सबकुछ मिला, अच्छा हुआ तो आनंद स्वरूप बन जाते हैं। सतचिदानंद स्वरूप हो जाते हैं। आत्मा अपने आपको जानती है, ८४ जन्मों के पार्ट को जानती है और बाप को जानती है तो आत्मा आनंद स्वरूप बन जाती है।

सावधान! आप अपनी विशेषता भगवान को वापस दे रहे हैं

प्रश्न : सही अर्थो में अमूल्य जीवन कैसे बने?

दादी जानकी जी : वैल्यू उसकी जो सच्चा है, जिसमें झूठ का नामोनिशान नहीं है। चलते-फिरते सच दिखाई पड़ता है। उसके अंदर भावना है, परमात्मा सत्य है। सत्यम् शिवम् सुंदरम मेरे बाबा का रूप है। सत्य है, कल्याणकारी है, ब्युटीफुल है। उन जैसा सुंदर कोई है ही नहीं। वह काले को भी गोरा बना देता है। इतना सच में शक्ति है। तो मैं ऐसा सच्चा हूं? सबके प्रति कल्याण की भावना है? ऐसा ब्युटीफुल बच्चा हूँ तो वैल्यू होगी। वरच्युज लाइफ में है, तो वैल्यू है, रास्ता क्लीयर है, कहाँ भटकता -मूँझता नहीं है। औरतों को भी रास्ता दिखाता जाता। उसके पीछे जाना अच्छा लगता है। कन्फ्यूज नहीं है। कहते भी हैं, सच की नइया डोलेगी पर गैरंटी है, डूबेगी नहीं। जाता है। पढ़ा-लिखा है तो अभिमान है, बोटमैन अनपढ़ है, अभिमान नहीं है। विशेषता का भी अभिमान न हो।

सत्य नारायण की कथा मशहूर है। नइया और खिवैया की कई कहानियाँ भक्ति में भी सुनी हैं। बोट चलाने वाला कभी डरता नहीं है, पार ले कोई कहता, मेरी यह विशेषता दी, यह भूल गया। अपना अभिमान आया तो जैसे भगवान की दी हुई विशेषता उसे ही वापस दे दी।

दुनिया धार्मिक बन रही है या भ्रष्टाचारी बन रही है?

प्रश्न : दुनिया में एक तरफ भ्रष्टाचार बढ़ रहा है और दूसरे तरफ धर्म एवं आध्यात्मिकता भी बढ़ रही है, तो यह दोनों विरोधाभास की बातें है, इसके बारे में क्या समझें कि दुनिया ज्यादा धार्मिक बन रही है या ज्यादा भ्रष्टाचारी बन रही है? आप क्या कहेंगे?

दादी जानकी जी : हम तो भगवान के साथी हैं, भगवान के साथ साक्षी हो सकके देख रहे हैं कि पाप, भ्रष्टाचार एक तरफ बढ़ गया है, दसरे तरफ धर्म वाले भी ऐसे समय पर हरेक अपने टाइम पर अपना पार्ट बजाने आयेंगे जरुर। अभी हर एक धर्म वाला अपने-अपने धर्म में लोभ और इगो का पार्ट बजा रहे हैं, इसका भी अन्त आने वाला है। सर्व धर्मानि परित्यज्य मामेकम्... जिन्होंने यह समझा कि देह के सब धर्मों को तोड़, मैं देह हूँ यह भान भी छोड़ मामेकम् याद कर... यह भगवान का फरमान है। तो जो भगवान के फरमान को मानने वाले हैं वो अभी ९ लाख तो हो गये हैं। नई दुनिया में तो इतने ही चाहिए ना क्योंकि सारा विश्व ही क्या से क्या बन गयी है। तो अब जब तक यह सब सफाई न हो तब तक सत धर्म कैसे आये! यहाँ पर जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग, जैसा पानी वैसी वाणी का ध्यान रखना है। ओम् शांति।

दादी जानकी जी के डायरी से...

क्रोध

क्रोध अहंकार का ही हिस्सा है
क्रोध आता ही तब है
जब तुम्हारे अहंकार को बाधा पडती है।
वही क्रोध आता है।
अगर तुम्हारे अहंकार को कोई
बाधा न आए तो क्रोध आएगा ही नहीं।

९६ साल चार महीने की युवा दादी जानकी की शक्ति का रहस्या क्या है?

प्रश्न : दादी जी, आपमें इतनी शक्ति कहाँ से आती है?

दादी जानकी जी : एक है बल, एक है शक्ति, एक है एनर्जी। यह बल भगवान से मिला है। निर्बल से लड़ाई बलवान की, ये कहानी है दीये और तूफान की। आखिर विजय किसकी हुई, दीये की। तूफान कितने भी आये पर दिया, दिया है ना। दीया अंधकार को मिटा देता है। दिये में भल तूफान लग जाये, पर दिया विश्वास है, अंदर की ज्योत है, जो परमात्मा बाप ने जगाई है, अंधों को राह दिखाने। अभी सुनते-सुनते अंधे को राह मिल गई। यह भी भक्ति में गाते थे। अभी अंधे को रास्ते का पता चल गया, मुझे कहाँ जाना है। जो बाबा कहता है, तुम अंधों की लाठी बनो। उसके लिए हमारे अंदर वृत्ति बड़ी अच्छी हो। बत्तीस साल में साकार बाबा के साथ रही, ४२ साल अव्यक्त बाप दादा को आँखों से देखा है। बाबा अव्यक्त होकर भी कितनी शक्ति हमको देता है। मुझ आत्मा ने जो परमात्मा शक्ति पाई है, वो चला रही है, वो है एनर्जी! सूक्ष्म, अति सूक्ष्म शक्ति मिली है। शक्ति तो चरित्र को चेंज करने के लिए मिली है। संग का रंग लगा। योगी बनना सहज हो गया। सहज योगी सदा सहयोगी। योग कोई बड़ी बात नहीं। अंदर-अंदर इतनी एनर्जी मिलती है जो सारे कार्य को सफल करती है। पावर हाऊस से कनेक्शन टूट जाये तो अंधियारा हो जायेगा। योग क्या है?ऐसी हमारी स्थिति हो जो हमारा जीवन दूसरों के लिए दर्पण बन जाये। शिव बाबा के साथ की शक्ति से आगे बढ़ते रही तो एनर्जी बच जाती है, अपनी एनर्जी को खर्च ही मत करो तो एनर्जी जमा होती रहती है। मुझे शुरू से बाहर के अशुद्ध वातावरण में रहने का संस्कार नहीं है। भगवान के बच्चे हैं तो किसी हालत में भी कभी अपने को तन वा मन से कमजोर होने नहीं देना चाहिए क्योंकि अशरीरी बनने का अभ्यास और मनमनाभव के महामंत्र से अपने संकल्प को शुद्ध और शांत रखने की शिक्षा मिली है। भगवान बल देवे और मह निर्बल रहें, यह शोभता नहीं है।

कईयों के पास एनर्जी है ही नहीं क्योंकि खर्च ज्यादा है, कमाई है ही नहीं। जो पढ़ाई अच्छी पढ़ता है और श्रीमत पर चलता है, उससे बाप, टीचर, सतगुरु तीनों खुश रहते हैं, उसके ऊपर और कहीं का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ सकता।

प्रश्न : दादीजी, आप क्या पुरुषार्थ करती हैं?

दादी जानकी जी : मैं अपने दर्पण को साफ रखती हूँ। मेरा दर्पण साफ हो तो मुझे अपना स्वरूप दिखाई पड़े। दर्पण में अपना रूप दिखाई पड़ता है। शीशे से दूसरों का दिखाई पड़ता है। ज्ञान की जो गहराई में जाता है, योग का जो रीयल अनुभव करता है, वो अपने को सुधारता है। दर्पण मेरा साफ हो। मेरा बाबा मेरे लिए दर्पण है। कितनी मैं खूबसूरत बनी हूँ? उसमें और हमारे में कोई अंतर न हो। यह है योग। यह मेरे लिए आइना है। इसमें सारा दिन देखती हूँ जो हमारी दृष्टि में होगा, वैसा हमारी वृत्ति में होगा। जो वृत्ति में होगा, वो दृष्टि औरों को मिलेगी। वृत्ति-दृष्टि बदलूँ तो जग बदलेगा।

दादी गुल्जार द्वारा अव्यक्त स्थिति बनाने की प्रेरणा लो

प्रश्न : दादी गुल्जार और आपसे हम सबको पवित्रता तथा साइलेंस की शक्ति की भासना आती है, हमसे भी आये, उसके लिए क्या करें?

दाजी जानकी जी : बाबा के बोल दिल से लग जाने पर वैसी धारणायें स्वतः होती जाती हैं। गुल्जार दादी ने बाबा के बोल से ले लिये जैसे वरदान के रूप में वो बोल आज दिन तक काम कर रहे हैं। बाबा के शब्दों को दिल से पकड़ लिया है इसलिए वो ऐसे बाप समान लायक बनी हैं। बाबा ने मम्मा से कहा, कृष्ण की राधा बनेंगी? बस, वो बात दिल में लग गयी तो वो श्रेष्ठ धारणायें करना शुरू हो गया, क्या चलन थी मम्मा की। सो वो मम्मा सो श्री राधे, श्री लक्ष्मी बन गयी। दादी गुल्जार द्वारा फिर अवय्क्त स्थिति बनाने की प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न : व्यर्थ बातें कैसे खत्म हों?

दाजी जानकी जी : जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं और जहाँ बाप है वहाँ बात नहीं। निश्चय में विजय है। सच्चाई में सफलता है। बाबा हमारे साथ है तो डरने की बात नहीं। कभी नहीं कहना, बाबा साथ दो ना। भिखारी हो क्या? बाबा के साथ का अनुभव औरों को अनुभव करायेगा। उसने मुझे साथ दिया है, अनुभव औरों को हो रहा है। भगवान हमारा साथी है और ड्राम पर चलने की शिक्षा दे रहा है। तो साक्षी होकर के पार्ट बजाओ।

आभार!

प्रथम अंक के सहयोग कर्ता
माताजी बी. के. शरवती उपाध्याय एवम्
बी. के.अशोक कुमार उपाध्याय
(पांडव भूवन-माउन्ट आबू-राजस्थान)

शिव बाबा रक्षा कब करता है?

प्रश्न : शिव बाबा रक्षा कब करता है?

दादी जानकी जी : मैं सदा अपने अकाल तख्त पर रहूँ. सबके प्रति शुभचिंतक रहूँ तो शिव बाबा मेरी रक्षा करता है। हमारा हाथ भी क्यों हिले। टांगें भी क्यों हिलें। कोई सोचे, मेरी उम्र बड़ी हो रही है, पता नहीं कल मेरा क्या होगा, कहाँ जाऊंगी, कौन पूछेगा.. यह भी फिक्र क्यों! बूढ़ी हो जाऊंगी तो कोई प्रबंध तो होना चाहिए ना... यह ख्याल त्यागी आत्मा को नहीं आ सकते। त्यागी कभी सेवा माँगता नहीं है, वह सदा सेवा करता रहता है।

अब नहीं करेंगे, कब नहीं करेंगे

प्रश्न : व्यर्थ से बचने का सरल युक्ति क्या है?

दाजी जानकी जी : मैं क्या करती हूं, इसके सिवाय और कुछ सोचना आता ही नहीं है। कल क्या हुआ था याद नहीं है, कल क्या होने वाला है, देखा जायेगा, समय बहुत है। एक शिव बाबा की गहराई में जाओ, डीप जाओ तो कोई संकल्प नहीं आयेगा। पाँच मिनट भी व्यर्थ संकल्प चला, तो जीवन क्या? एक मिनट भी व्यर्थ संकल्प चला तो जीवन नहीं है। बाबा कहो और अन्दर चले जाओ... मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ। ऐसी स्थिति बनाने के लिए अपनी घोट तो नशा चढ़े,जो करना है, अब करना है क्योंकि जो अब नहीं करेंगे, कब नहीं करेंगे। ऐसी-ऐसी बातें जो मीठे बाबा ने सुनाई है वो भूलना माना भटकना। जो बाबा की बातों को भूलते हैं उनकी बुद्धि का ठिकाना नहीं मिलता है। बाबा की बातों को याद करो तो बुद्धि सदा सालिम रहेगी। सोचने की बात नहीं है, समय अनुसार टच होगा- यह कर, यह न कर। क्वेश्चन नहीं होगा कि करना है या नहीं करना है। वेट एण्ड सी। ऐसे-ऐसे जो बोल हैं उनसे जीवन में सुरक्षा है, ऐसे के संग में रहने वालों की भी सुरक्षा है। माया रावण से सुरक्षित रहना और साफ रहना।

परमात्मा बाप हमको शिक्षा देकर के धोखेबाज दुनिया से किनारा कराकर समझदार बनाकर डिटेच और लविंग बनाता है

हमारी मनोवृत्ति शुद्ध और शांत हो यही है आधुनिक जमाने का पुरुषार्थ-जानकी दादीजी

प्रश्न : नेगेटिव ख्याल कब आते हैं?

दादी जानकी जी : आजकल मनुष्यों में भारीपन बहुत है, तन से भी भारी, मन से भी भारी, धन है तो भी भारी, नहीं है तो भी बारी। हमें तो हल्का बनना है, चिंता नहीं करनी है, फिक्र नहीं करना, कोई बात का दुःख नहीं करना है। कोई कामना नहीं रखनी है, पर अच्छी भावना रखनी है। जितनी अच्छी भावना रखनी है। जितनी अच्छी भावना रखते हैं तो भगवान हमारे ऊपर राजी हो जाता है। फिर जो सेवा अर्थ संकल्प करेंगे वह पूरा देगा। तुम पुरुषार्थ अच्छा करो। पुरुषार्थ में वेस्ट थाट नॉट एलाउ, नेगेटिव प्वाइजन है, पॉजिटिव अमृत है। बॉडी कान्सेस हैं तो निगेटिव ख्याल आयेगा। सोल कान्सेस हूँ, आत्मा हूँ तो परमात्मा की हूँ। भगवान कभी नहीं कहता, तुम मेरी नहीं हो। मैं तेरी हूँ, तू मेरा है। तो मैं भी वायदा करूँ ना। मैं भी कहूँ, तेरे सिवाए मेरा कोई नहीं। उसने हमें सुख, शांति, आनंद, प्रेम में सम्पन्न बना दिया, कोई कमी नहीं है। जब अन्दर प्युरिटी है, शुद्धि, सच्चाई है तो परमात्मा से डीप संबंध हो जाता है। फिर सबके साथ वफादारी, ईमानदारी से चलता है। दुनिया में कहाँ भी जाओ हर इंसान में प्युरिटी और आनेस्टी की कमी है। जहाँ भी जाओ, धोखा ही मिलता है। हर एक ने कहाँ न कहाँ से धोखा खाया है या किसको धोखा दिया है। वह बिचारा सुखी कैसे रह सकता है। परमात्मा बाप हमको शिक्षा देकर के धोखेबाज दुनिया से किनारा कराकर समझदार बनाकर डिटेच और लविंग बनाता है। पहले डिटैच फिर मेरी नेचर लविंग हो जाए। ऐसी लविंग बन जाए जो दूसरे का कनेक्शन भी परमात्मा से जुट जाए। वह भी संसार से डिटैच और परमात्मा से लविंग बन जाएं।

(पृष्ठ १ का शेष...)

परिस्थिति कैसी भी हो लेकिन हमारी स्व-स्थिति उससे ऊँची हो। अगर स्व-स्थिति ऊँची नहीं है तो परिस्थिति का प्रभाव पड़ जाता है।

किसी की भी बात साइलेंस में रहकर सुनें, जवाब दें या न दें, समय पर उसे अपने आप ही जवाब मिल जायेगा। हमें बात ऐसे करनी चाहिए जो सामने वाला समझ कर कोई बात कहे। जैसे दादी गुलजार बाबा के दिन कितना ध्यान रखथी है, पूरा समय साइलेन्स में रहती हैं। ऐसे हम भी साइलेन्स में रहना सीख जायें, तो बाबा सब काम अपने आप ही करा लेगा।

शिवबाबा आया तो ब्रह्मा बाबा को कितनी गालियाँ खानी पड़ीं। बाबा कहता, बच्चे उनका दोष नहीं है, पहचानते ही नहीं हैं। कोई फिर बातों में मिर्च-मसाला डालकर उन्हें खूब चटपटा बना देते हैं, लेकिन उन बातों का प्रभाव हमारे ऊपर न पड़े। इतनी साइलेन्स की या स्नेह की शक्ति हो जो अंदर ही अंदर उन्हें परिवर्तन कर लें।

कोई कल की बात है, कोई मास दो मास पहले वाली बात है, अगर वह भूली नहीं है तो हमारी स्वस्थिति कैसे बनेगी? परिस्थिति आई, मैं थोड़ा परेशान हुई तो स्वमान गंवाया। कोई भी पेपर आया, स्वमान में रहे तो पेपर पार हो गया। हम पास हो गये। अगर पास नहीं हुए तो मार्क्स कम हो जायेंगे। इतना पुरुषार्थ में खबरदार, होशियार,सावधान रहना है। पहले सिक्योरिटी वाले आवाज करते थे, खबरदार, होशियार। आज के जमाने में रड़ी नहीं मारते हैं। लेकिन अलर्ट ऐसे रहते हैं जो किसी की भी हिम्मत अंदर आने की न हो।

समर्पण है तन-मन-धन का। मेरा कुछ भी नहीं। अगर आइवेल के लिए कुछ जेबखर्च भी रख दिया है, तो समर्पण कैसे हुए? हमारा मन-वचन-कर्म श्रेष्ठ हो, ऑनेस्टी भी बहुत चाहिए। जरा भी हेराफेरी न हो। जो बोलें, वह सच बोले। एक बाबा के सिवाय दूसरा कोई याद न आये, ऐसा वफादार होकर रहना है। कोई सामने बैठा हो या हजारों माइल दूर बैठा हो, उसको साइलेन्स की शक्ति मिलती रहे। अगर किसी कारण मैं गिरी, चोट आई तो बाबा कहेगा, इसका योग ठीक नहीं है।

यह गफलत में है। कोई धक्का खाता है, हार्ट में पेन होता है, तो जरूर दर्द का कोई तो कारण होगा। दिमाग में अगर डिप्रेशन आया तो उसका कारण भी वेस्ट थाट्स है। ऐसी कंडीशन मेरी न हो, इसमें बहुत खबरदार होशिया रहना है-यह है आधुनिक जमाने का पुरुषार्थ।

महान आत्मा बनना है? अपने को मेहमान समझो

प्रश्न :आप अपने को मेहमान समझकर कैसे चलती हैं?

दादी जानकी जी : अपने को मेहमान समझना, यह महान आत्मा बनने की बहुत अच्छी विधि है। मेहमान अर्थात्, मैं शब्द कहने से अंदर और 'मेरा' कहने से ऊपर चले जाएं। संगम पर बाबा की दृष्टि से 'मैं' शुद्ध हो जाये, ईश्वरीय आकर्षण में मैं-पन की सुध-बुध भूल जाये। मेरा-मेरा की आदत जो है वह खत्म हो जाये। चिंता और व्यर्थ चिंतन करने की आदत भी निकल जाये।

जीवन में सुख शांति समृद्धि कैसे प्राप्त करें!

(पृष्ठ ८ का शेष...) अभी देखो कि याद से यह सब जंक उतरी है? ज्ञान की इतनी शक्ति हो जो पूरी जंक उतर जाये, निकम्मी चीज काम वाली हो जाये। पाँच विकारों में से कोई भी विकार है तो वो शिव बाबा के घर के अंदर रह नहीं सकता, इसलिए वो गेट आउट हो जाता है। उसके पाँव अन्दर टिकेंगे नहीं, कारण अकरण माया बाहर भगा के लेके जायेगी। कहेगी यहाँ तो तुम्हारी दाल गलेगी नहीं, इसलिए चलो मैं तुमको लेके जाती हूँ। सीता मर्यादा की लकीर से एक बार थोड़ी सी बाहर निकली तो रावण ने उसको खींच के अपने पास बिठा दिया।

ईर्ष्या पंच महाभूतों से भी तेज है। वो काम, क्रोध, लोभ, मोह,अहंकार तो चले गये पर ईर्ष्या कभी भी शांति से शिव बाबा को याद करने नहीं देगी, श्रेष्ठ कर्म करने नहीं देगी। सुख शांति समृद्धि प्राप्त करने नहीं देगी।

बाबा ने जो उम्मीदें रखी है वो पूरी करके अपना भाग्य का सितारा चमकाने नहीं देगी। अपनी इच्छाओं तमन्नाओं में औरों से बेंट करते रहेंगे। ईर्ष्या वाले के चिंतन में सारा दिन द्रेष भाव होगा, मित्रता भाव नहीं होगा। जिसके अन्दर द्रेष भाव है वो कभी भी न अपना मित्र खुद बन सकता है और न ही दूसरे किसी को अपना मित्र बना सकता है। वो कभी किसी को यह नहीं समझेगा यह मेरा भाई है, यह मेरी बहन है, जैसे उसके दुश्मन है। अरे! उसको सब प्यार करते हैं, पर वह उस प्यार को भी ठुकराते हैं। ईर्ष्या वाले को देख ऐसे लगता है इनसे तो भगवान बचाये, उनकी आँखें दुःखी रहने की, दुःख देने की होती है। सारा दिन अन्दर गुस्सा, गुस्सा...

जिसमें ईर्ष्या है, द्रेष भाव है, आलस्य है, उसके पास सुस्ती तो रावण की बहन है। सुस्ती ज्ञान सुनने नहीं देगी, योग लगाने नहीं देगी। बाकी वो ८-१० घंटा काम कर सकता है, लेकिन ज्ञान सुनने समय नींद आयेगी, योग लगाते समय नींद आयेग। तो यह जब तक अंदर ध्यान नहीं रखा तो शिव बाबा के काम के नहीं रहे ना। भले वो समझता रहे कि मैंने इतनी सेवा की, पर बाबा कहेगा मेरे काम का बच्चा नहीं है।

सावधान: आप अपनी विशेषता भगवान को वापस दे रहे हैं

प्रश्न : सही अर्थों में अमूल्य जीवन कैसे बने?

दादी जानकी जी : वैल्यू उसकी जो सच्चा है, जिसमें झूठ का नामोनिशान नहीं है। चलते-फिरते सच दिखाई पड़ता है, उसके अंदर भावना है, परमात्मा सत्य है। सत्यम शिवम् सुंदर मेरे बाबा का रूप है। सत्य है, कल्याणकारी है, ब्यूटीफुल है। उन जैसा सुंदर कोई है ही नहीं। वह काले को भी गोरा बना देता है। इतना सच में शक्ति है। तो मैं ऐसा सच्चा हूँ? सबके प्रति कल्याण की भावना है? ऐसा ब्यूटीफुल बच्चा हूँ तो वैल्यू होगी। वरच्युज लाइफ में हैं तो वैल्यू है, रास्ता क्लीयर है, कहाँ भटकता-मूँझता नहीं है। औरों को भी रास्ता दिखाता जाता। उसके पीछे जाना अच्छा लगता है। कन्फ्यूजन नहीं है। कहते भी हैं, सच की नइया डोलेगी पर गैरंटी है, डूबेगी नहीं। सत्य नारायण की कथा मशहूर है। नइया और खिवैया की कई कहानियाँ भक्ति में भी सुनी है। बोट चलाने वाला कभी डरता नहीं है, पार ले जाता है। पढ़ा-लिखा है तो अभिमान है, बोटमैन अनपढ़ा है, अभिमान नहीं है। विशेषता का भी अभिमान न हो। कोई कहता, मेरी यह विशेषता है, भगवान ने यह विशेषता दी, यह भूल गया। अपना अभिमान आया तो जैसे भगवान की दी हुई विशेषता उसे ही वापस दे दी।

बाबा के बोलने की कोपी करो तो सफलता साथ देगी

प्रश्न : सफलता के लिए सरल-सा सूत्र बताइये?

दादी जानकीजी : सतयुग में तो राजाई होगी यहाँ के पुरुषार्थ से। अभी भी प्रकृति अधीन नहीं बना सकती। वह हमारे अधीन रहे। प्रकृति को अधीन बनाओ, तुम उसके अधीन नहीं बनो। ५ तत्वों का यह शरीर है, ५ तत्वों की दुनिया है। हर एक का स्वभाव अपना-अपना है, उसके अधीन नहीं बनो। शिव बाबा से शक्ति लेकर गुणवान बनो। काम होगा, तो क्रोध भी जरूर होगा। मेरे मनपसंद काम नहीं हुआ, थोड़ी भी ईर्ष्या है तो क्रोध जरूर होगा। इसलिए मन-वाणी-कर्म को बाबा से मिलाओ। बाबा ने कभी नहीं कहा कि मेरा विचार यह है, बाबा हमेशा कहेगा-बच्चे, बाबा ने यह समझाया है। बाबा के बोलने की कोपी करना सीख लो तो भी सफलता साथ देती है। हमारा समाय सफल हो गया तो वायुमण्डल भी अच्छा हो जाता है।

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संक्षिप्त रूप रेखा

- वर्ष १९३६-३७ में स्थापना
- मुख्य प्रशासिका - राजयोगिनी दादी जानकी जी
- अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय - आबू पर्वत - राजस्थान
- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है, जिसके १३० से अधिक देशों में ८००० से भी अधिक आध्यात्मिक सेवा केंद्र हैं।
- संस्था बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग की शिक्षा देती है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) से गैर सरकारी संगठन (एन. जी.ओ.) के रूप में संलग्न है तथा युनिसेफ (UNICEF) तथा इकोनोमिक एण्ड सोशल काउन्सिल (ECOSOC) के साथ परामर्श दाता का स्तर रखती है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) द्वारा आयोजित विभिन्न प्रयिजोनाओं-महिलाओं, पर्यावरण, शिशुओं व स्वास्थ्य संरक्षण आदि में संस्था सहभागी रहती है।
- इस संस्था ने संयुक्त राष्ट्र संघ का शांतिदूत पुरस्कार (पीस मैसेन्जर अवार्ड) तथा अन्य अनेक शांति पुरस्कार प्राप्त किये हैं।
- ब्रह्माकुमारीज की राजयोग एज्येकेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन (RERF) के माध्यम से १९ प्रभागों (WINGS) की स्थापना की गई है ताकि विभिन्न क्षेत्रों व व्यवसायों की सेवा की जा सके। ये प्रभाग हैं- प्रशासन, व्यापार व उद्योग, कला व संस्कृति, शिक्षा, न्याय विद,चिकित्सा, मीडिया, राजनीति, धर्म, ग्राम विकास, सुरक्षा, खेल, सामाजिक सेवा, वैज्ञानिक एवं अभियन्ता, यातायात, महिलाएं एवम युवा आदि।

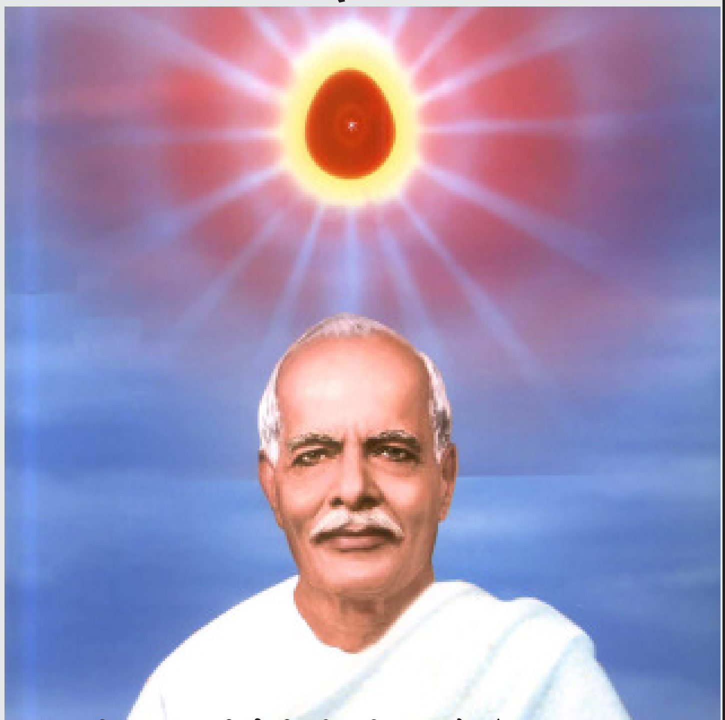

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक ब्रह्मा बाबा.

अपने तथा औरों के अनुभव से स्थिति को मजबूत बनायें

प्रश्न : पुरुषार्थ में सफलता का आधार क्या है?

दादी जानकी जी : देही-अभिमानी स्थिति में नेचुरल रहा जाए, यह नेचर बन जाए। मैंने देखा है, इसमें दिल से पुरुषार्थ करने वाले को सफलता मिलती है। दिल से करे और लगातार भी करे। कब-कब शब्द होने से, लगातार न होने से मेहनत करनी पड़ती है। फिर आत्मविश्वास थोड़ा कम हो जाता है। अपने अनुभव से, चाहे औरों के अनुभव से, अपनी स्थिति को मजबूत बनाना है। कभी हमारा आत्मविश्वास कम न हो। ब्राह्मण जीवन में विश्वास ने ही यहाँ तक लाके बिठाया है। सेवा में भी बाबा को विश्वास हो गया है कि मेरे बच्चे करेंगे। अगर हमको अपने पर विश्वास है तो बाबा को भी हमारे में विश्वास हो गया है, तब तो कहते हैं कि बच्चे करेंगे। शिव बाबा तो करनकरावनहार है, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर से भी कराने वाला है। करनकरावनहार का पार्ट एक ही है।

सदा खुश रहो और खुशी बांटो

प्रश्न : जीवन में बल और फल मिले?

दादी जानकी जी : हमें सदा ही खुश रहना और खुशी बांटना है। खुश वो रहता है जिसका पढ़ाई से प्यार है, उसका खुशी का पारा चढ़ा रहता है। उसके पांव कभी धरती पर मैले नहीं होते हैं। खुशी में नाचता वो है जो खुश रहता है, मुझे कौन मिला है, कैसे मिला है? अंदर ही अंदर अपने को समझने से, सही सच्चा पुरुषार्थ करने से बल मिलता है। फिर फल अच्छा निकलता है। धारणा करने से और योग लगाने से शिव बाबा बल देता है। अभी आप ध्यान रखो, ज्ञान तो मिला, पर योग अच्छा है? अनुभव करो। योग का बल मिलता है, योग से फिर धारणा पर ध्यान जाता है। धारणा से फिर हमारे सारे अवगुण चले जायें, सर्वगुण संपन्न बन जाऊं। माइण्ड में शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प होंगे तो योग अच्छा होगा। फिर धारणा पर ध्यान होगा, किसी का अवगुण न देखें। सतोगुणी बनना है सर्वगुण सम्पन्न बनने के लिए। सर्वगुण सम्पन्न बनने से फिर चढ़ती कला में आ गये। तो एक है अशरीरी रहना, दूसरा है सेवा में निमित्त भाव से रहना। सत्यता, नम्रता, मधुरता इससे सेवा में नेचुरल फल मिलता है। फल से बल मिलता है। इसका अनुभव करके देखना।

शिव बाबा मेरे से क्या चाहता है यह है राजयोग

प्रश्न : राजयोग क्या है?

दादी जानकी जी : शिव बाबा मेरे से क्या चाहता है? यह है राजयोग। बाबा ने दृष्टि दे करके हमारी आँखों को ही बदल दिया, देखना है तो क्या? सुनना है तो क्या? यह है राजयोग, जिससे बल मिलता है। मुझे क्या देखना है, क्या सुनना है, क्या बोलना है? इतना अपने ऊपर ध्यान रखेंगे यानि जितना साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे। जरा-सा छींटा भी हमारे ऊपर पड़ा तो इज्जत हमारी ही गई, गफलत हमारी ही मानी जायेगी, इसमें कोई भी कारण नहीं दे सकते हैं। अच्छी बात ले लो फायदे के लिए, किसको दोष मत दो। कोई भी कारण सोचना, बताना, दिल में रखना यह सब समय की बर्बादी है। तो या है वरदान या है वरी। न वरी, न हरी न करी।

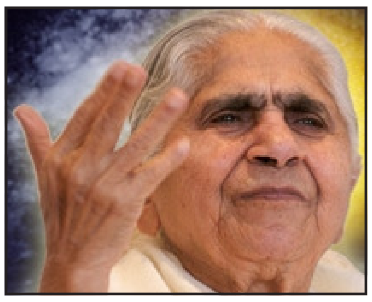

प्रश्न : चारों विषयों (ज्ञान, योग, धारणा, सेवा) के आपसी संतुलन का क्या अर्थ है?

दादी जानकी जी : योग लगाकर ज्ञान सुनाते हैं तो दूसरे का भी बाबा से योग लग जायेगा। योग नहीं है, तो ज्ञन कितना भी अच्छा हो, बाबा से कनेक्शन नहीं जुटेगा। एक कान से सुन दूसरे से ज्ञान निकल जायेगा और योग का अनुभव नहीं करा पायेंगे।

२ - कोई भी बात अपनी या पराई चित्त पर न रहे। अच्छी बात है वो याद रहती है, फालतू की सब बातें भूल जायें। मन बिल्कुल फ्री है। कोई बात बुद्धि को खीच न पाये।

३- अगर सेवा में बिजी रहें तो माया को आने का चांस नहीं है लेकिन सिर्फ बिजी रहने के लिए सेवा नहीं करनी है। सेवा मेरा भाग्य है। त्याग का भाग्य है। मम्मा-बाबा की त्याग वृत्ति देख हम सभी को त्याग करना सहज हो गया। देह के संबंध की कुछ भी याद नहीं। वन्डर है, कैसे त्याग हो गया।

४- सारी सेवा त्याग और तपस्या के आधार से है। मान-शान मिले, पोजीशन मिले उस आधार से सेवा नहीं है। सेवा में समय सफल हो रहा है, मेरा यह भाग्य है। सेवा स्थिति को अडोल बनाने का साधन है, छोटी-मोटी बातें स्वतः ही पार हो जायेंगी।

प्रश्न : अच्छी स्थिति बनाने के लिए क्या करें?

दादी जानकी जी : स्थिति में सच्चाई, सफाईष सादगी हो। जितना सिम्पल रहें उतना सुखी हैं, इसलिए यह चाहिए, वह चाहिए... कोई जरूरत नहीं है। चाहिए चाहिए- चाहिए बड़ा नुकसानकारक है। एक है मेरे लिए होना चाहिए... और नहीं तो यह तो होना चाहिए। दूसरा, यहाँ सिस्टम ऐसी होनी चाहिए..। तीसरा, इसको यह समझाना चाहिए... अरे, तुमको क्या करने का है। अपने को कुछ नहीं चाहिए, जो बाबा की मेरे में उम्मीदें हैं ना वो पूरी करनी हैं बस। बाकी किसी भी प्रकार का 'चाहिए' शब्द नुकसानकारक है, इससे फ्री हो जाओ तो बहुत राजाई है। संगमयुग पर बाबा के राजे बच्चे बन जाओ, बाबा की यह बात सिरमाथे पर रख दो। कैसी भी आत्मा हो उसके लिये भी रहमदिल बनो। मन में, दिल में सच्चाई और प्रेम का भण्डारा भरपूर हो, दाता बन देते जाओ। भाग्यविधाता ब्रह्मा बाबा, वरदाता शिवबाबा, भाग्य है जो यहाँ बैठने, खाने, पहनने के लिए बिगर मांगे बाबा की तरफ से सबकुछ मिलता है। दिल साफ रखो, तो बाबा से जो चाहिए वो आपे ही मिल सकता है। किसी की, कोई भी बात दिल में रखी तो बाबा दृष्टि नहीं देगा। कोई भी बात सामने आये, बाबा के सामने बैठ जाओ तो बात चला गई, ऐसी अवस्था बन जाये। ऐसे किया है हमने तब बता रहे हैं। अभी बाबा ने कहा, शिव शक्ति बन जाओ तो बस और क्या चाहिए।

'सुख शांति समृद्धि' मासिक हर अंक में योग्य सेवाभावी सम्माननीय प्रतिभा को सेवा मूर्ति अॅवार्ड प्रदान करेगा

हमें बड़ी प्रसन्नता है कि 'सुख शांति समृद्धि' मासिक अपना गौरवपूर्ण 'सेवा मूर्ति अॅवार्ड' प्रदान करने की आदर्श परंपरा का आरंभ कर रहा है। हर अंक में यह अवार्ड जरुरतमंद इंसान और पशु पक्षि की सेवा के क्षेत्र में जिन्होंने विशिष्ठ योगदान दिया हो ऐसे सम्मानित महानुभाव या संस्था को समर्पित किया जायेगा। प्रभू की प्रेरणा से 'सुख शांति समृद्धि' मासिक अपना प्रथम अवार्ड आदरणी श्री. मंगलप्रभात लोढ़ा को समर्पित करता है।

प्रथम सेवा मूर्ति अवार्ड मंगलप्रभात लोढ़ा को समर्पित

प्रतिष्ठित परिवार के मंगल प्रभात जी लोढा सफल बिजनेसमैन, सक्रिय राजकारणी और निःस्वार्थ समाजसेवा का त्रिवेणी संगम हैं। युवा जगत की प्रेरणामूर्ति हैं। प्रसिद्ध भूतपूर्व मुख्य न्यायमूर्ति और सक्रिय समाजसेवक सदगत श्री गुमानमल लोढाजी के सुपुत्र मंगलजी ने अपना एल. एल. बी. का शिक्षण पूर्ण करके बिजनेस क्षेत्र में प्रवेश किया। अपनी प्रमाणिकता और दृढ़ पुरुषार्थ से सफलता हासिल करने के साथ-साथ राष्ट्र के विकास में योगदान देने हेतु राजकारण में भी सक्रिय हैं। वर्तमान समय में वे विधायक हैं। अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए कई सुंदर रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। समाज सेवा में अग्रिम भूमिका निभा रहे हैं। उनकी अनेक प्रकार की मानव सेवा से प्रभावित होकर 'सुख शांति समृद्धि' मासिक अपना गौरवपूर्ण 'सेवा मूर्ति अवार्ड' मंगल प्रभात लोढा को समर्पित करता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मंगलजी को अपने जीवन का लक्ष्य हासिल करने में पूर्ण सफलता मिले और समाज में हरेक को सुख शांति समृद्धि प्राप्त हो और ऐसे विराट पुण्य के कार्य में वे अपना मुख्य योगदान दें।

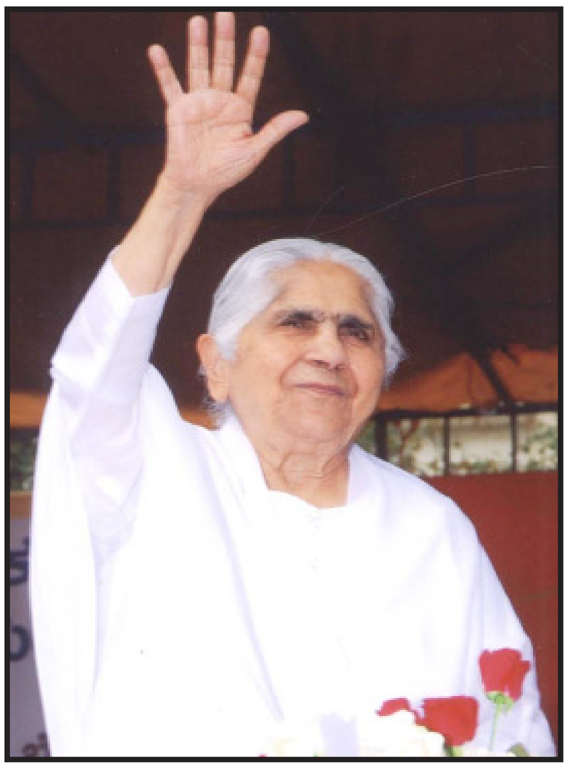

जीवन में सुख शांति समृद्धि कैसे प्राप्त करें?

ईर्ष्या पंच महाभूतों से भी तेज है, इससे स्वयं को मुक्त करके सुख शांति समृद्धि सम्पन्न बनो

जानकी दादी : 'सुख शांति समृद्धि' का भंडारा भरपूर है। दुःख किस चीज का नाम है, यह पता ही नहीं है। जो कभी किसी भी प्रकार से किसी को दुःख नहीं देते हैं तो उनका चार्ट अच्छा है। फिर कोई मेरे को दुःख देवे तो भी नहीं लो। दुःख देंगे नहीं तो दुःख लेंगे भी नहीं। कोई कुछ कहता है, अच्छा ठीक है... ऐसे नहीं कि मेरा यह अपमान करता है।

सच्चाई समय पर आपे ही हमको शक्तिशाली बनाती है। अगर मेरे अन्दर सच्चाई नहीं है और हम कहें मैं सच्ची हूँ, कितना भी दिखाऊं कि मैं सच्ची हूँ तो भी कोई नहीं मानेगा। सच ऐसी चीज है, अंधों को आँख देने वाला है। बहरों को कान देने वाला है। गूंगों को बुलवाने वाला है। सच्चाई के महत्व को अच्छी तरह से दिल से जान करके लाइफ में धारण कर लें। अभी तक अगर किसी संग के प्रभाव या दबाव में जंक चढ़ जाती है तो वो निकम्म बना देती है।

(पृष्ठ ६ पर...)

'सुख शांति समृद्धि' मासिक के संपादक का परिचय

सर्जन और संपादन में व्यस्त वरिष्ठ पत्रकार जितु सोमपुरा धार्मिक चैनल जगत में पिछले १७ साल से सफलतापूर्वक जुड़े रहे हैं। वर्तमान समय में वे ब्रह्माकुमारीज के 'पीस ऑफ माइंड' चैनल के साथ संलग्न हैं। सोमपुराजी देश विदेश में सर्वप्रथम धार्मिक कार्यक्रमों की गंगा बहाने वाली गुजराती चैनल गुर्जरी में प्रोग्राम मैनेजर थे। उसके बाद उन्होंने आस्था, संस्कार, आय. पी. टी. वी., ज्ञान, यु. के. की एम. ए. टी. वी. में अपना श्रेष्ठतम योगदान दिया। बहुआयामी व्यक्तित्व के श्री जितु भाई मुंबई के अग्रणी जन्मभूमि ग्रुप के गुजराती दैनिक में १८ साल पत्रकार रहे। इन्होंने ३ गुजराती फिल्म और ३ गुजराती टी. वी. धारावाहिक लिखी है। इनकी एक फिल्म को गुजरात सरकार का श्रेष्ठ पटकथा लेखक का अॅवार्ड मिला है। श्री. जितुभाई स्वामिनारायण संप्रदाय के पूज्य श्री प्रमुखस्वामीजी महाराज की मुलाकात पर आधारित अक्षर संवाद पुस्तक के लेखक भी है। गुजरात के पूज्य महामंडलेश्वर श्री भारती बापू द्वारा निर्मित गुजरात के प्राचीन २०० भजन और उनके इतिहास की ५० घंटे की डी. वी. डी. के संपूट की परिकल्पना एवं पुरूषार्थ इनकी अनेक विशेषताओं में से एक है।

सुख शांति समृद्धि हिन्दी मासिक समाचार पत्र, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : जितू सोमपुरा ने सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. ७, उद्योग भवन, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, वालभट्ट रोड, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-४०००६३ से मुद्रित कर ३२, प्रेस इंक्लेव, ६३, वैद्य नगर, दत्तानी स्कूल के सामने, टाटा पावर हाऊस, बोरिवली (पूर्व), मुंबई, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। **संपादक : जितू सोमपुरा**